GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

हिंदी फिल्मों में पत्रकारों का चित्रण: एक सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन

(सामाजिक सरोकारों के विशेष संदर्भ में)

अखिलेश यादव

शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,

छत्रपति शाहू जी महराज विश्वविद्यालय कानपुर

सारांश

हिंदी सिनेमा भारतीय समाज के बदलते राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिदृश्यों का एक सशक्त दर्पण रहा है। इस संदर्भ में पत्रकारिता, जिसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है, सिनेमा में एक महत्वपूर्ण विमर्श के रूप में निरंतर उपस्थित रही है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हिंदी फिल्मों में पत्रकारों के चित्रण का सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि विभिन्न कालखंडों में पत्रकारों की छवि किस प्रकार निर्मित, परिवर्तित और पुनर्निर्मित होती रही है।

इस अध्ययन में Leader, Phir Bhi Dil Hai Hindustani, Nayak: The Real Hero, Page 3, Rann, Peepli Live, No One Killed Jessica, PK तथा Bajrangi Bhaijaan जैसी प्रतिनिधि फिल्मों का चयन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्रारंभिक हिंदी सिनेमा में पत्रकारों को आदर्शवादी, सत्यनिष्ठ एवं जनपक्षीय व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि उदारीकरण के पश्चात् उनके चित्रण में व्यावसायिक दबाव, बाजारीकरण तथा नैतिक द्वंद्व प्रमुख रूप से उभरकर सामने आए हैं।

विशेष रूप से Nayak: The Real Hero पत्रकार को एक सक्रिय सामाजिक परिवर्तनकर्ता के रूप में स्थापित करती है, जबकि Page 3 मीडिया के बाजारीकरण और नैतिक संकट को रेखांकित करती है। समकालीन हिंदी सिनेमा में पत्रकारिता के प्रति एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ है, जिसमें समाचारों के नाटकीयकरण, टीआरपी-केन्द्रित प्रवृत्तियों तथा संवेदनहीनता को प्रमुखता से दर्शाया गया है।

अतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी फिल्मों में पत्रकारों का चित्रण केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ, मीडिया विमर्श तथा जनचेतना को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक माध्यम है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

प्रस्तावना

सिनेमा को समाज का दर्पण कहा जाता है, किंतु यह केवल यथार्थ का निष्क्रिय प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि सामाजिक वास्तविकताओं का सक्रिय पुनर्निर्माण भी करता है। हिंदी सिनेमा ने विभिन्न ऐतिहासिक चरणों में समाज की राजनीतिक संरचनाओं, सांस्कृतिक मूल्यों तथा वैचारिक प्रवृत्तियों को अभिव्यक्त किया है।

पत्रकारिता, जो लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक अनिवार्य अंग है, सिनेमा में एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरती रही है। पत्रकार समाज में सूचना के प्रवाह को सुनिश्चित करते हैं तथा सत्ता की जवाबदेही तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः फिल्मों में पत्रकारों का चित्रण समाज की मीडिया के प्रति धारणा, विश्वास तथा आलोचना को प्रभावित करता है।

शोध उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(1) हिंदी फिल्मों में पत्रकारों के चित्रण का विश्लेषण करना।

(2) विभिन्न कालखंडों में इसके स्वरूप में आए परिवर्तनों का अध्ययन करना।

(3) मीडिया, समाज एवं सत्ता के अंतर्संबंधों को समझना।

(4) पत्रकारिता के नैतिक संकट और उसके सामाजिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।

शोध पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) पद्धति पर आधारित है। इसमें चयनित फिल्मों का विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis) किया गया है। विश्लेषण के दौरान पात्रों, कथानक, संवाद और प्रतीकों के माध्यम से पत्रकारों के चित्रण के विभिन्न आयामों को समझने का प्रयास किया गया है।

अन्तर्वस्तु विश्लेषण

1. आदर्शवादी चरण (1950–1970)

प्रारंभिक हिंदी फिल्मों में पत्रकारों को आदर्शवादी, सत्यनिष्ठ और जनपक्षीय व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस कालखंड में पत्रकार समाज सुधारक की भूमिका निभाते हुए दिखाई देते हैं।

Leader इस प्रवृत्ति का प्रमुख उदाहरण है, जिसमें पत्रकार सत्ता के विरुद्ध खड़ा होकर सत्य और न्याय की स्थापना का प्रयास करता है। यह दौर राष्ट्र-निर्माण का था, इसलिए पत्रकारों का चित्रण भी आदर्शवादी मूल्यों से युक्त था।

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

2. संघर्ष एवं हस्तक्षेप का चरण (1970–2000)

इस कालखंड में पत्रकारों का चित्रण अधिक सक्रिय, संघर्षशील और हस्तक्षेपकारी रूप में उभरता है। पत्रकार केवल घटनाओं के दर्शक नहीं रहते, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप करने वाले पात्र बन जाते हैं।

Phir Bhi Dil Hai Hindustani मीडिया की प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृत्ति, टीआरपी की दौड़ और सनसनीखेज पत्रकारिता को उजागर करती है।

इसी संदर्भ में **Nayak: The Real Hero** विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

इस फिल्म में **अनिल कपूर** द्वारा निभाया गया शिवाजी राव एक ऐसे पत्रकार का प्रतिनिधित्व करता है, जो न केवल सत्ता से प्रश्न करता है, बल्कि व्यवस्था परिवर्तन की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाता है।

शिवाजी राव का संघर्ष बहुआयामी है। एक ओर वह पेशेवर स्तर पर सीमित संसाधनों और संस्थागत दबावों से जूझता है, वहीं दूसरी ओर वह राजनीतिक सत्ता से टकराने का साहस भी दिखाता है। मुख्यमंत्री से सीधे प्रश्न करना और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाना उसके चरित्र की निर्भीकता को दर्शाता है।

जब उसे एक दिन के लिए मुख्यमंत्री बनने का अवसर मिलता है, तब उसके सामने नैतिक चुनौती उत्पन्न होती है—क्या वह अपने आदर्शों को व्यवहार में लागू कर पाएगा? इस स्थिति में वह त्वरित निर्णय लेकर प्रशासनिक सुधार करता है और यह सिद्ध करता है कि पत्रकारिता केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी उपकरण भी हो सकती है।

3. उदारीकरण और मीडिया का बाजारीकरण (1990–2010)

आर्थिक उदारीकरण के पश्चात् भारतीय मीडिया का स्वरूप तेजी से बदलता है। मीडिया संस्थान कॉर्पोरेट ढांचे में परिवर्तित होते हैं, जिससे पत्रकारिता में व्यावसायिकता और बाजारीकरण बढ़ता है।

Page 3 इस परिवर्तन का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण प्रस्तुत करती है।

इस फिल्म में **कोंकणा सेन शर्मा** द्वारा निभाया गया माधवी का चरित्र पत्रकार के आंतरिक संघर्ष को उजागर करता है। माधवी एक 'पेज 3' पत्रकार है, जिसे ग्लैमर और सेलिब्रिटी जीवन से जुड़ी खबरों तक सीमित कर दिया जाता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

उसका पेशेवर संघर्ष इस बात में निहित है कि वह गंभीर सामाजिक मुद्दों पर काम करना चाहती है, किंतु मीडिया संस्थान उसे सतही और मनोरंजन-प्रधान पत्रकारिता तक सीमित कर देता है। धीरे-धीरे उसे यह एहसास होता है कि मीडिया वास्तविक समस्याओं को नजरअंदाज कर रहा है और केवल टीआरपी तथा बाजार के दबाव में काम कर रहा है।

यह स्थिति उसके भीतर नैतिक द्वंद्व उत्पन्न करती है। ग्लैमर की दुनिया के पीछे छिपे शोषण, अपराध और असमानता से उसका सामना होता है, जिससे उसका मोहभंग हो जाता है। वह अपनी पेशेवर पहचान और जिम्मेदारी को लेकर गंभीर संकट का अनुभव करती है।

इस प्रकार, यह फिल्म पत्रकारिता के बाजारीकरण, नैतिक पतन और संरचनात्मक सीमाओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है।

इसी कालखंड में **Rann** मीडिया और राजनीति के गठजोड़ को उजागर करती है, जबकि **No One Killed Jessica** मीडिया की जनदबाव निर्माण करने की क्षमता को दर्शाती है।

4. समकालीन आलोचनात्मक चरण (2010–वर्तमान)

समकालीन हिंदी फिल्मों में पत्रकारिता के प्रति एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण उभरता है।

Peepli Live मीडिया की संवेदनहीनता और ग्रामीण मुद्दों के नाटकीयकरण को उजागर करती है।

PK पत्रकारिता के जिज्ञासु और सकारात्मक पक्ष को प्रस्तुत करती है।

Bajrangi Bhaijaan में **नवाजुद्दीन सिद्दीकी** का चाँद नवाब पत्रकार के मानवीय और संवेदनशील स्वरूप को अभिव्यक्त करता है।

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

Stuart Hall के प्रतिनिधित्व सिद्धांत के अनुसार मीडिया केवल यथार्थ को प्रतिबिंबित नहीं करता, बल्कि उसका निर्माण भी करता है।

Antonio Gramsci के वर्चस्व सिद्धांत के अनुसार मीडिया सत्ता संरचनाओं को बनाए रखने का माध्यम बन सकता है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

चर्चा

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी फिल्मों में पत्रकारों का चित्रण समय के साथ अधिक जटिल और बहुआयामी होता गया है। यह चित्रण समाज में मीडिया की बदलती भूमिका, उसकी चुनौतियों तथा उसके अंतर्विरोधों को उजागर करता है।

निष्कर्ष

हिंदी फिल्मों में पत्रकारों का चित्रण समाज और मीडिया के बीच संबंधों का दर्पण है।

Nayak: The Real Hero पत्रकार को परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है, जबकि Page 3 पत्रकारिता के नैतिक संकट को उजागर करती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सिनेमा मीडिया की भूमिका को समझने और उसकी आलोचना करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

संदर्भ सूची

Hall, S. (1997). Representation.

Gramsci, A. (1971). Prison Notebooks.

फिल्में:

Leader

Nayak: The Real Hero

Page 3

Peepli Live